लोक-सभा वाद-विवाद (संक्षिप्त अनूदित संस्करण)
LOK SABHA DEBATES (SUMMARISED TRANSLATED VERSION)

लोक-सभा
LOK SABHA

सोमवार, 5 मई, 1969/15 वैशाख, 1891 (शक)

Monday May 5, 1969/ Vaisakha 15, 1891 (Saka)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[**अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए**
MR. SPEAKER *in the Chair*]

निधन सम्बन्धी उल्लेख

भारत के राष्ट्रपति, डा० जाकिर हुसैन का निधन

प्रधान मंत्री, अणु शक्ति मंत्री तथा योजना मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : डा० जाकिर हुसैन के निर्धन से देश को गंभीर क्षति पहुँची है। वह हमारी परम्परागत सभ्यता के प्रतीक थे। उनके श्रेष्ठ व्यक्तव्य में हमें धीरता एवं सज्जनता का अनुपम सामंजस्य था और वे हमारी विविधता पूर्ण संस्कृति के उत्कृष्ट आदर्श थे।

डा० जाकिर हुसैन जैसा महान तथा सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व देश को सौभाग्य से ही मिलता है। वह महान विद्वान्, विचारक एवं अद्वितीय प्रतिभावान् लेखक थे। वह समान रूप से, जनसमुदाय तथा प्रकृति प्रेमी थे तथा सृजनात्मक कालाओं के प्रति उनकी तीव्र रूचि थी। देश के उच्चत्तम पद पर पहुँच कर भी उन्होंने विनम्रता के महान गुण को बनाए रखा तथा वह अपने आपको अध्यापक कहलाने में ही अपना गौरव अनुभव करते थे।

उनके व्यक्तित्व पर इस्लाम तथा हमारे देश एवं विश्व के महान धर्मों की शिक्षा का प्रभाव पड़ा। महात्मा गांधी तथा अन्य स्वतंत्रता प्रेमियों और पाश्चात्य देशों की उदार तथा मानवीय विचारधारों एवं सभी देशों के महान कवियों तथा लेखकों की रचनाओं से उन्हें प्रेरणा ली थी। वह सब प्रकार की रुढ़ियों अथवा संकीर्णताओं से मुक्त थे।

भारत के राष्ट्रपति के रुप में उन्होंने विश्व के राजनीतिज्ञों तथा जनता को अत्यधिक प्रभावित किया तथा अपने देश के प्रति अन्य देशों में भारत का सम्मान बढ़ाया और उन देशों की मैत्री अर्जित की।

उनकी पार्थिव देह को आज सायंकाल उनकी प्रिय शैक्षणिक संस्था जामिया मिलिया में

दफनाया जाएगा। वह देश को एक उद्यान तथा पाठशाला बनाना चाहते थे। आज वह भौतिक रूप में हमारे मध्य विद्यमान नहीं हैं, परन्तु उनके साधुवचन, उनकी निष्ठा, अनुकम्पा एवं सहनशीलता के उदाहरण हमारे स्मृति-पटल पर अमिट रूप से बने रहेंगे और अत: वे हमारे अन्त: करण के भाग बन जायेंगे।

मैं सरकार की प्रमुख के रूप में, राष्ट्रपति के निधन पर शोक प्रकट करती हूँ। अपने कार्य काल की अल्प अवधि में, कठिन परिस्थितियों में वह मेरी सरकार की शक्ति के स्त्रोत थे। स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी महान सेवाओं को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

मैं सरकार की ओर से तथा सदन की ओर से प्रार्थना करती हूँ कि डा० जाकिर हुसैन के शोका कुल परिवार को हमारा शोकसंदेश भेजा जाय।

मैं इस सम्बन्ध में एक संकल्प प्रस्तुत करती हूँ, "कि लोक-सभा, जो राष्ट्रीय दुःखद घटना के शोकाकुल वातावरण में समवेत हुई है, भारत के राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के अकस्मात निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती है, और देश भक्ति, राष्ट्रीय एकता, धर्म निरपेक्षता तथा मानव मात्र की सेवा उनके उच्च आदर्शों के संवर्द्धन के लिए संकल्प करती है।"

श्री मी० रू० मसानी (राजकोट) : मैं सदन के नेता द्वारा व्यक्त भावनाओं में अपने दल की सहमति अभिव्यक्त करता हूं।

जामिया मिलिया के दृढ़ आधार पर निर्माण में मुझे भी जाकिर साहब को थोड़ा सहयोग देने का सुअवसर मिला था।

वह भारतीय संस्कृति, देशभक्ति, सज्जनता तथा विनम्रता के प्रतीक थे। वह महान गांधी वादी थे तथा प्रजातंत्र में उनका अगाध विश्वास था।

डा० जाकिर हुसैन के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए आकाशवाणी से एक वक्ता न ठीक ही कहा था कि डा० जाकिर हुसैन स्वभावत: अथवा मानसिक रूप से राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं रखते थे।

राष्ट्रपति का कार्य-भार सम्भालने पर उन्होंने कहा कि :

"आज की परिस्थिति में हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम अधिक कार्य करे, हमारा कार्य शान्तिपूर्वक एवं निष्ठापूर्वक हो। हम अपनी जनता के सम्पूर्ण स्वाभाविक तथा सांस्कृतिक का ठोस तथा सुस्थिर रूप से पुर्नानिर्माण करें।

Shri Jagannath Rao Joshi (Bhopal) : Dr. Zakir Husain was a great patriot, eminent educationist, and a man of talent. He was a great admirer of nature. He lived a simple life. He devotedly served the country and the people. He was a Member of Parliament, he also held the office of a Governor and ultimately he was honoured with the office of the President of this great country. He added to the prestige and dignity of that office. His great ideals shall ever remain a source of inspiration for all of us.

श्री के० अंबाझागन (तिरुचेंगोड) : हमारे राष्ट्रपति न केवल हमारे देश के अध्यक्ष थे